ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 210-211
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

वृद्ध महिलाओं की मानवीय संवेदना सम्बन्धी समस्याएँ

डॉ० राजीव कुमार श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा पी. जी. कालेज, सुदिष्टपुरी–रानीगंज, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received- 05 .02.2022, Revised- 10 .02.2022, Accepted - 12.02.2022 E-mail: rksharpur1974@gmail.com

सारांशः – *भारत में बुजुर्ग को देव– तुल्य समाज मान दिये जाने की परम्परा रही है। इसमें भी महिलाओं को प्रथम स्थान रहता है, क्योंकि यह जननी स्वरूपा मानी जाती हैं। ये मान्यताएँ सैद्धान्तिक एवं शास्त्रीय हैं, व्यावहारिक नहीं। आज के समय में जबकि भौतिकता अपने चरमोत्कर्ष शिखर की ओर अग्रसर है, मानवीय संवेदनाओं का स्थान गौढ़ होता जा रहा है। इस प्रक्रिया से सर्वाधिक प्रभावित महिलाएँ हो रही हैं (मुख्यतया वृद्ध महिलाएँ)। एक तो महिलाओं का समाज में प्रस्थिति द्वितीयक है, दूसरी ये सामान्यतया पुरूषों पर निर्भर रहती हैं और तीसरा ये वृद्ध हैं। इन .ष्टिकोणों से वृद्ध महिलाओं के विमर्श का मुद्दा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र में इन्हीं सन्दर्भों के आलोक में 'वृद्ध महिलाओं की मानवीय समस्याओं' का तथ्यात्मक विश्लेषण किया गया है।*

कुंजीभूत शब्द– तुल्य समाज, परम्परा, जननी स्वरूपा, मान्यताएँ, शास्त्रीय, व्यावहारिक, भौतिकता, चरमोत्कर्ष शिखर।

पति, डॉ० कुमुदिनी का विचार है कि, 'पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की स्थिति बुढ़ापे में अधिक दयनीय हो जाती है। वे तीन तरह की उपेक्षा झेलती हैं – एक तो सामान्य नागरिक के रूप में य दूसरे , महिला के रूप में और तीसरे , बुजुर्ग के रूप में। ' डॉ ० पति का विचार सदियों से सत्यता की कसौटी पर तो खरे उतरते ही रहे हैं , आज के भौतिकतावादी युग में इस वैचारिकी के मन्थन का अधिक महत्त्व हो गया है। तथ्य उद्घाटित कर रहे हैं कि भारत में बूढ़े पुरुषों की अपेक्षा बूढ़ी महिलाओं की संख्या अधिक है , इनमें भी बूढ़ी अपाहिज महिलाओं की संख्या अधिक है और गाँव – घर में निरूद्देश्य पड़ी महिलाएँ और अधिक हैं। वृद्धों में विधवाएँ भी विधुर की अपेक्षा अधिक पायी जा रही हैं। वृद्ध महिलाओं को समाज और परिवार बोझ के रूप में देखने लगा है , क्योंकि वे बीमारियों के चलते अनुत्पादक, व्यय साध्य, पर – निर्भर और असंतुष्ट होती हैं। ऐसी महिलाएँ मानसिक रूप से कष्टप्रद और असुरक्षित होने के कारण बीमारियों की भी शिकार होती हैं और इससे इन पर व्यय बढ़ जाता है और इनके देखभाल की भी जरूरत पड़ती है, जिससे आज का अपने को अत्यन्त व्यस्त (व सेल्फिस) दिखाने वाला व्यक्ति इससे वृद्ध महिलाओं पर झल्लाने लग रहा है और उन्हें कोसने लगा है। इससे वृद्ध महिलाओं में निराशा हीनता और असुरक्षा की भावना को विकास स्वभावतः हो जाता है।

वृद्ध महिलाओं में उत्पन्न निराशा, हीनता और असुरक्षा उन्हें अनेक जैविकीय व्याधियों से ग्रस्त कर देते हैं। इनमें मनोपॉजी हो जाता है और प्रजनन की क्षमता खत्म हो जाती है, उनका समाज में स्तर ओर निम्न हो जाता है। इसी प्रकार, यह स्थिति एस्ट्रोजेन नामक हार्मोन की कमी कर देता है, जो अनेक शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं को जन्म देती हैं। ऐसी स्थिति में या तो वृद्ध महिलाएँ आत्म– करूणा से ओत– प्रेत रहने लगती हैं या फिर चिड़चिड़ी और दूसरों को परेशान करने वाली बन जाती हैं। इस प्रकार की स्थिति एक सास के रूप में भी देखने को मिलता है, किन्तु इस प्रकार की स्थिति सामान्यतया पति की मृत्युपरान्त और पुत्र पर निर्भरता की स्थिति में अधिक प्रत्यक्ष होता है। इस प्रकार की स्थिति सामन्ती वैचारिकी वाली, बेरोजगार महिलाओं या ग्रामीण उच्च जातीय परिवारों में अधिक देखने को मिलता है।

वृद्धावस्था सामान्यतया जर्जरावस्था होता है, जिसमें व्यक्ति की पूर्व की अवस्थाओं (बचपन, प्रौढ़ा या युवा अवस्था, जिसमें व्यक्ति अपने को सुसज्जित करके रखता है और विभिन्न क्रिया– कलापों के माध्यम से अपने को कारगर एवं उत्पादकर रूप में प्रस्तुत करता है।) से भिन्न होता है। अन्य शब्दों में वृद्धावस्था में चमड़ी, उनके बाल, उनकी मांसपेशियों और हड्डियों, उनके प्रजनन अंग आदि शिथिल, कमजोर एवं अत्यल्प क्रियाशील हो जाते हैं। ये स्थितियाँ भी महिलाओं में हीनता की भावना को भर देते हैं और कई अवसरों पर ये अभिव्यक्तियाँ सार्वजनिक तौर पर भी अभिव्यक्त हो जाती हैं। फिटनेस क्लबों, स्पा, जिम और ब्यूटी पार्लरों तक समाज के एक छोटे वर्ग तक ही पहुँच है, शेष को उभरती सच्चाई को स्वीकार करना पड़ता है और अपनी शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए प्रा.तिक उपाय करने ही पड़ते हैं। यह भी अल्प ही लोगों को ज्ञात है कि बचपन के प्रोटीनयुक्त खानपान और जवानी में लोहा और कैल्शियम व फॉलिक एसिड से परिपूर्ण पौष्टिक आहार बुढ़ापे को सुखद और स्वस्थ बनाता है। जब महिलाओं को 50 की उम्र के बाद से स्वास्थ्य की समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं, तो वे इधर– उधर से नुस्खे पता करके काम चलाने की कोशिश करती हैं और अपने शरीर को घसीटती रहती हैं, तॉकि परिवार में उनकी उपयोगिता किसी तरह बनी रहे, वरना उन्हें परिवार के लिए बेकार समझा जाने लगेगा। यह भी दृष्टव्य है कि अधिकांश पौष्टिक आहार पुरुषों को दे दिया जाता है, क्योंकि पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं का अपने बारे में पौष्टिक भोजन करने के बारे में सोचना भी गलत माना जाता है। इस प्रकार की सोच भी वृद्ध महिलाओं के कष्ट को और अधिक बढ़ा देता है। उक्त वजहों से संयुक्त राष्ट्र ने वृद्ध महिलाओं की स्थिति को सुधारने पर सर्वाधिक बल दिया। सन् 1982 में संयुक्त राष्ट्र ने वियना

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

में बुढ़ापे पर पहली जनरल असेंबली आयोजित की थी, जिसमें वृद्ध महिलाओं के लिए सामाजिक कार्यक्रम और सामाजिक सुरक्षा की चर्चा की गई। सन् 1990 में जनरल असेंबली ने वृद्धों के लिए अन्तरराष्ट्रीय दिवस घोषित किया। सन् 1991 में 46वें सत्र में वृद्ध महिलाओं के लिए विशेष सुविधाओं की घोषणा की गयी। सन् 2002 में संयुक्तराष्ट्र की वृद्धों पर द्वितीय विश्व असेंबली हुई और सन् 2010 में 45वें अधिवेशन में भी वृद्ध महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों और उन पर उठाए जाने वाले कदमों की रूपरेखा तय की गईगई, यथा– डायन प्रथा, वृद्ध विधवाओं की हत्या, आरोप लगाकर प्रताड़ित करना इत्यादि। भारतवर्ष में तो वृद्ध महिलाओं की सम्पत्ति को हथियानें के लिए सामान्यतया इस प्रकार के क्रिया– कलापों को दबंग लोगों द्वारा अंजाम दिया जाता रहा है। इसी के मद्देनजर सन् 1999 में भारत सरकार ने वृद्धों के लिए राष्ट्रीय नीति बनाई, जिसमें वृद्ध महिलाओं की विशिष्ट प्रस्थिति पर बहुत अल्प बल दिया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्ध महिलाओं के कल्याण सम्बन्धी योजनाओं के रहते हुए भी इसका लाभ ये नहीं प्राप्त कर पाती हैं। 'स्वधार स्कीम' या 'इन्दिरा गाँधी विधवा पेशन' में भी व्यापक स्पतर पर भष्टाचार उजागर होता रहा है। येन– केन प्रकारेण वृद्ध महिलाओं को पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता है। इसी प्रकार नगरीय क्षेत्रों में घरेलू महिला तक को ऐसी योजनाओं की जानकारी नहीं रहती हैं, क्योंकि घरेलू महिलाओं का समाज अत्यल्प सरोकार रहता है और संघर्ष करने की प्रवृत्ति भी इनमें कम ही पायी जाती है। अतः वृद्ध महिलाओं को इनके लिए निर्मित सामाजिक कल्याण सम्बन्धी योजनाओं की प्राप्ति का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

प्रशासनिक अधिकारियों, चुनाव आयोग, बैंकों, अस्पतालों और स्वास्थ्यकर्मियों, रेलवे, हवाई जहाज और बस सेवाओं को वृद्ध महिलाओं के लिए विशेष सुविधाओं में वृद्धि किया जाना चाहिए। इसी प्रकार, वृद्ध महिलाओं की स्थिति और सुविधाओं के अध्ययनार्थ अलग से मंत्रालय की स्थापना किया जाना चाहिए। साथ ही, महिला संगठनों को भी वृद्ध महिलाओं, खासकर दलित– आदिवासी, गरीब, अल्पसंख्यक, अनाथ व अकेली, और उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं की वृद्ध महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, मानसिक और शारीरिक स्थिति, उनके पोषण और उनकी निरक्षरता तथा उनके अपंगता हामे की स्थिति आदि का भी अध्ययन कराया जाना चाहिए। इस प्रकार अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षो के आधारा पर वृद्ध महिलाओं के मुद्दे को तार्किक रूप से उठाये जायेंगे और उन्हें अपने निष्क्रीय जीवन से उबारकर उनके सहकारी संस्थाओं का निर्माण करवाकर उत्पादकता से सम्बद्ध की जायेगी, तो उनके आत्मसम्मान में वृद्धि होगी। इसी प्रकार वृद्ध महिलाओं का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाना चाहिए और कुपोषण से बचाने के लिए संतुलित तथा पोषणयुक्त आहार की व्यवस्था भी करना नितान्त आवश्यक हैं, इन उपायों के माध्यम से वृद्ध महिलाओं के जीवन के अन्तिम समय को सुखप्रद, संतोषप्रद और शांतिमय बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पति, डॉ० कुमुदिनीः "दें बुजुर्ग महिलाओं को सम्मान", आधी दुनिया, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक समाचार पत्र, वाराणसी, 15 मई– 2013.
2. Bose, Ashish: Meeting India's Best Needs: The Human Development IndeÛ. Delhi. 1996.
3. Burgess, E-W- and Locke, H-J-: The Family, American Book, New York, 1963.
4. Cammile, Vallau: Encylopedia of the Social Sciences Mcmillan, New York, 1930.
5. Human Development Report, 2009. Yojana, June& 2010.

*****